प्रवासी साहित्य
भाव और विचार
संपादिका
संध्या गर्ग

प्रवासी साहित्य

भाव और विचार

सं. संध्या गर्ग

साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

© सम्पादिका

ISBN : 978-93-82597-33-9

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2017
कवर डिजाइन : एम डी सलीम

मूल्य : ₹ 995/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 15/- (अन्य देश)

PRAVASHI SAHITYA : BHAV AUR VICHAR
Edited by Sandhya Garg

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट**, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

अनुक्रम

1. सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में चित्रित समस्याएँ 13
प्रियंका सिंह

2. महिला कथाकार और प्रवासी साहित्य 19
आरती

3. कालिदास का संघर्ष और प्रवासी साहित्य 26
डॉ. मधु कौशिक

4. प्रवासी कथा साहित्य में भाव और परिवेश का द्वंद्व 31
डॉ० संध्या वात्स्यायन

5. प्रवासी जीवन की सिनेमाई अभिव्यक्ति 38
डॉ. ऋतु

6. प्रवासी साहित्य का संघर्ष 45
रंजना सिंह

7. प्रवासी साहित्य में गिरमिटिया समाज 49
डॉ. भारती अग्रवाल

8. प्रवासी साहित्य : पश्चिमी धरती पर बन रहे भावों और विचारों के हाईवे का दस्तावेज 56
डॉ. स्वाति श्वेता

9. तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में भाव एवं विचारों का सौंदर्य 61
डॉ. दत्ता कोल्हारे

10. श्यामनारायण शुक्ल की कहानी जमीला में निहित अंतर्विरोध 67
डॉ. राजमोहिनी सागर

11. हिंदी का अंतरराष्ट्रीय संदर्भ 72
डॉ. अंजु रानी

12. प्रवासी साहित्य और हिंदी की भूमिका 76
डॉ. संगीता गुप्ता

13. प्रवासी जीवन : विशेष संदर्भ उषा प्रियम्वदा के उपन्यास 81
डॉ. पुष्पा गुप्ता

14. पितृसत्ता और प्रवासी स्त्री लेखन (विशेष संदर्भ कहानियाँ) 91
रीता दुबे

15. प्रवासी साहित्य और राष्ट्रीय प्रेम 99
अमित कुमार
16. उषा राजे सक्सेना और सुषम बेदी के कथा साहित्य में नारी 105
डॉ. संगीता वर्मा
17. प्रवासी हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा 111
डॉ. दीपक शर्मा
18. तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में भाव और विचार 118
रीता
19. सुषम बेदी के उपन्यासों में नस्लवाद 137
विनय कुमार पांडेय
20. प्रवासी साहित्य में भारतीय हिंदी प्रवासी साहित्यकार का जीवन संघर्ष.... 144
दीपक यादव
21. प्रवासी साहित्य : भाव और विचार 148
नीलम रानी
22. शेषयात्रा या स्त्री की संघर्षयात्रा 154
डॉ. कमलेश कुमारी
22. प्रवासी साहित्य में भाव और विचार का द्वंद्व 158
कुमार गौरव
23. विश्वभाषा के पथ पर हिंदी : समस्याएँ और संभावनाएँ 163
आशुतोष शुक्ल
24. वैश्विक परिदृश्य और हिंदी साहित्य 168
डॉ. संतोष कुमार भारद्वाज
25. प्रवासी हिंदी कथा साहित्य और स्त्री 172
डॉ. मीना
26. वैश्विक स्तर पर हिंदी का योगदान 176
डॉ. (श्रीमती) हरिणी रानी आगर
27. मानवीय जीवन में बाल-साहित्य की भूमिका 181
डॉ. हरदीप कौर
28. उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में प्रवासी परिवेश 185
डॉ. अरविंदर कौर
प्रवासी साहित्य और सुषम बेदी की कहानियाँ 192
डॉ. स्नेह लता

30. महिला कथाकार और प्रवासी साहित्य 199
आरती
31. गिरमिटिया मजदूरों का प्रवासी जीवन : स्वरूप एवं समस्याएँ....... 202
उपासना
32. विदेशी नारी के विविध रूप एवं प्रभा खेतान के उपन्यास........... 215
डॉ. मोहम्मद इसराइल
33. प्रवासी साहित्यकार उषा प्रियंवदा की कहानियों में चित्रित स्त्री पात्र.......220
निदा
34. प्रवासी महिला कविता : संवेदना और शिल्प 229
डॉ. रमा
35. 'रुकोगी नहीं राधिका' अस्तित्व की खोज 237
डॉ. अनीता
36. महेंद्र भल्ला के उपन्यास 'उड़ने से पेश्तर' में प्रवासी जीवन का यथार्थ.249
अमृत कुमार
37. प्रवासी हिन्दी साहित्य : जड़ों की तलाश 255
डॉ. बिमलेन्दु तीर्थंकर
38. वैश्विक परिदृश्य एवं तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ 263
डॉ. डिम्पल गुप्ता
39. नीना पॉल की कहानियों में स्त्री द्वंद्व 270
डॉ. पूनम यादव
40. अर्चना पेन्युली की घर वापसी में व्यक्त संवेदना 275
विनीता रानी
41. मानवीयता और विश्वबंधुत्व की आकांक्षा "एक उम्मीद और".. 279
डॉ. भारती
42. दिव्या माथुर की कहानियों में स्त्री 285
मीनाक्षी
43. प्रवासी साहित्य में हिंदी का महत्त्व 293
डॉ. सविता
44. साहित्य की नई धारा : प्रवासी साहित्य 298
मीनाक्षी
44. प्रवासी साहित्य और सोशल मीडिया 302
डॉ. संजय कुमार सिंह

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में भाव और विचार

रीता
सहायक प्रवक्ता (तदर्थ)
मैत्रेयी कॉलेज हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
डब्ल्यू जैड-159ए/के-140, गली न.-3,
तिहाड़ गाँव, नई दिल्ली-110018
ई-मेल : reetaeklavya123@gmail.com
मोबाइल : 9250471777

प्रवासी भारतीय लेखकों ने केवल अपने साहित्य के माध्यम से हिंदी और उसके साहित्य को वैश्विक आधार दिया है बल्कि भारत में भी हिंदी साहित्य को विस्तृत किया है। प्रवासी साहित्यकारों ने हिंदी भाषा में मौलिक साहित्य का सृजन कर वैश्विक मंच पर हिंदी की प्रतिष्ठा की अभिवृद्धि की है। इसमें तनिक भी संशय नहीं है कि हिंदी का प्रवासी साहित्य बहुत समृद्ध है। प्रवासी साहित्य की अपनी परम्परा, इतिहास, उपलब्धियां और गरिमा है। प्रवासी साहित्य ने हिंदी का अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप विकसित किया है।

प्रवासी शब्द से प्राय: जो अर्थ ग्रहण किया जाता है वह है विदेशों में रहने वाले भारतीय और प्रवासी साहित्य का अर्थ है - जो लेखन कार्य अपने घर से दूर हुआ हो यानी विदेशों में। प्रवासी साहित्य किसे माने इस विषय पर सभी एकमत नहीं हैं। ऐतिहासिक रुप से देखें तो भारत से विदेश जाने वाले लोगों की परिस्थितियां व प्रेरणा भिन्न हैं। इनमें से एक वर्ग ऐसे भारतीयों का था जिन्हें अंग्रेज, डच, व फ्रांसीसी शासक अपने-अपने गुलाम देशों में धोखे से गिरगिटिया मजदूर बनाकर ले गए थे। भारत में फिजी, सूरीनाम, मॉरीशस, त्रिनिडाड गए इन गिरगिटिया मजदूरों ने हिम्मत नहीं हारी तमाम कष्टों, तिरस्कार, परेशानियां और शोषण सहकर भी परायी भूमि में अपनी पहचान को बनाए रखा। ये लोग अपने साथ विरासत के रुप में धर्मग्रंथ, लोकगीत, स्वभाषा, संस्कृति और परम्पराओं को लेकर गए थे और तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद उन्होंने इन्हें सुरक्षित

रखा। यही कारण है कि देश से दूर विदेशों में भारतीय भाषा व संस्कृति अक्षुण्ण रही।

दूसरे वर्ग में वे भारतीय आते हैं जो अपनी मर्जी से देश छोड़कर विदेशों में बस गए हैं। देश की आजादी से बहुत पहले ही भारतीयों ने विदेशों में जाकर बसना शुरु कर दिया था। बेशक वे विदेशों में जाकर बस गए हो पर अपनी जड़ों से नहीं कटे हैं। भारतीय संस्कार और भाषा उनकी आत्मा में रच-बस रही है। विदेशों में रहने वाले प्रवासी लेखकों ने अपनी लेखनी को माध्यम बनाकर न केवल भारतीय परिवेश, संस्कारों, यहाँ की मिट्टी की गंध, पर्व-त्यौहारों को जीवित रखा वरन् विदेशों के परिवेश, संस्कारों, समस्याओं, परिस्थितियों एवं भाषा से भी हिंदी पाठकों को रुबरु करा हिंदी का अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप विकसित किया है।

प्रवासी साहित्य किसे कहें-इस विषय पर सभी एकमत नहीं हैं। हिंदी शब्द सागर में प्रवासी का अर्थ है ''जो देश छोड़कर बाहर बस जाए वह प्रवासी है'' आशीष कंधवे का मानना है कि 150 साल पहले जो मजदूर गए थे ज्यादातर अशिक्षित थे। उन्होंने साहित्य नहीं रचा उनके बाद की पीढ़ी ने जो विदेशों में ही पैदा हुई है उन्होंने हिंदी साहित्य रचा परंतु उनका जन्म भारत में नहीं हुआ है। उनके साहित्य को प्रवासी साहित्य नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि वे उस तरह भारत से नहीं जुड़े हुए जैसे कि यहाँ जन्में लोग। प्रवासी का अर्थ ही यह है कि वे लोग जिनका जन्म एक देश में हुआ हो और अजीविका, शिक्षा अथवा अन्य किसी कारण से अन्य देश में रह रहे हों। जो लोग बाद में 30-40 साल पहले देश छोड़कर अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, अरब आदि देशों में गए उनका साहित्य प्रवासी साहित्य माना जाना चाहिए क्योंकि उनका जन्म भारत में हुआ है, वे अपने देश से परिचित हैं और विदेशों में प्रवास करते हुए लिख रहे है। तेजेंद्र शर्मा, सुषम बेदी, अर्चना पेन्यूली, उषा राजे ये सब प्रवासी साहित्यकार है आशीष कंधवे उन्हे 'वैश्विक दूत' की संज्ञा देते है।'' [1]

तेजेंद्र शर्मा जी का मानना है कि प्रथम पीढ़ी जो देश छोड़कर बाहर बस गई है वह प्रवासी है। और इस प्रथम पीढ़ी के लोग जो साहित्य सृजन करते हैं वह प्रवासी साहित्यकार है। दूसरी पीढ़ी जो विदेशों में ही जन्मी है वह प्रवासी नहीं है।'' [2] सत्यकेतु सांकृत प्रवासी हिंदी साहित्य को 'अमूल्य निधि' मानते हैं। वे कहते हैं कि साहित्य साहित्य है उसे बांटा न जाए कि यह प्रवासी साहित्य है और यह मुख्यधारा का साहित्य है। हिंदी में रचा साहित्य हिंदी साहित्य है।'' [3] अपनी जन्मभूमि से दूर जो लिख रहे हैं वे प्रवासी है। भिखारी ठाकुर का नायक भी तो कलकत्ता जाकर ही प्रवासी हो जाता है। डॉ. कृष्ण

कुमार का मत है कि घर से बाहर व्यक्ति देश के ही अन्य हिस्से में भी रहकर लिख सकता है तो उसका लेखन प्रवासी साहित्य में आना चाहिए। दूसरा व्यक्ति घर से दूर विदेश में रहकर लिखता है तो ऐसे साहित्य को विदेशी प्रवासी साहित्य कहा जाना चाहिए। ''विदेशी प्रवासियों के हिंदी साहित्य को 'विदेशी प्रवासी हिंदी साहित्य' माना जाना चाहिए।'' [4] तेजेंद्र शर्मा मानते हैं कि लेखक प्रवासी हो सकता है मगर उसका साहित्य कैसे प्रवासी साहित्य हो सकता है।

भारतीय मूल के विदेशों मे रहने वाले लोगों के रचनात्मक लेखन को 'प्रवासी साहित्य' माना जाता है और जिन लेखकों ने हिंदी को केन्द्र में रखकर या माध्यम बनाकर लेखन कार्य किया है वे 'प्रवासी हिंदी साहित्यकार' हैं। राजेंद्र यादव लम्बे समय तक इसे 'नास्टेल्जिया' का साहित्य कहते रहे हैं। यदि प्रवासी साहित्य में 'नास्टेल्जिया' है तो वह स्वाभाविक है। कमलेश्वर इस विषय पर मानते हैं कि 'नास्टेल्जिया या स्मृति कोई गलत मूल्य नहीं है। ' नास्टेल्जिया' जो लिट्रेचर है या जिसमें 'नास्टेल्जिया है, स्तुति है, यादें है वे अपने आप में बहुत गहरी भी होती हैं और कारगर भी। खासतौर पर वो लोग जो भारत छोड़कर दूसरे देशों में चले गए हैं उन्हें तो निश्चित रुप से अपने देश की, अपने प्रांत की, अपने गाँव की, अपने घर की याद सताती है। कितने लोग आते हैं अपने पुराने गाँव का नाम सुनकर। यहाँ हमारे पूर्वज रहते थे, ये पूर्व स्मृति ही नास्टेल्जिया है। उसके तहत वो लोग उसको याद करते हैं। वो उनके साहित्य में दिखाई भी पड़ता है। ये कोई गलत बात नहीं है'' [5] कमलेश्वर मानते है कि प्रवासी साहित्यकारों ने साहित्य की अपनी परम्परा तैयार की है।

हिमांशु जोशी भी इनके साहित्य में ''नास्टेल्जिया'' का होना स्वाभाविक मानते हैं। ''लोग अपने रीति-रिवाजों से, अपने वतन से, अपने इलाके से बिछड़कर दूर चले जाते है तो अपना गाँव, अपने लोग, अपना प्रदेश याद आ ही जाते हैं।'' [6] वे मानते है कि प्रवासी साहित्यकार जो लिख रहे हैं चौंकानेवाला है और प्रवासी हिंदी साहित्य के बिना हिंदी साहित्य का इतिहास अधूरा है।

हिंदी प्रवासी साहित्यकारों की सूची में तेजेंद्र जी का नाम प्रथम श्रेणी के कथाकारों में माना जाता है। तेजेंद्र शर्मा ब्रिटेन में बसे भारतीय मूल के हिंदी के कथाकार हैं। ये कवि और रंगकर्मी भी है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी तेजेंद्र शर्मा जी समकालीन कथा संसार के चर्चित नाम है। इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर के सभागार में अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में स्वर्गीय श्री राजेंद्र यादव इनकी कहानी कला के विषय में कहते हैं ''प्रवासी लेखक तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ कई बारीक स्तरों पर पहचान की खोल की कहानियाँ है। कब्र का मुनाफा संग्रह में तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ सधी और तराशी हुई है।'' [7] प्रो. अमीन मुगल के

अनुसार ''तेजेंद्र शर्मा के कहानी संसार में आपको इंसानों की बेकली, इंसानों का दर्द, इंसानों की लड़ाईयां, इंसानों की जंग, इंसानों की मायूसियां, उनकी खुशियाँ, सब कुछ नजर आयेगा, और सामने ये भी नजर आयेगा - इन्सानियत का आदर्श, मुहब्बत, प्रेम और एक दूसरे के साथ मिलने का जज्बा। लेकिन क्या इंसान सचमुच मिलते है? क्या उनके दिल एक दूसरे के साथ मिलते है? इनकी कहानियों में पेचीदगियों का पता चलता है जो इंसान की शख्सियत में पाई जाती है। तेजेंद्र इसलिये मुझे एक कामयाब कहानीकार लगता है।'' [8]

स्कूल ऑफ ओरियेन्टल एण्ड अफ्रीकन स्ट्डीज की प्रोफेसर फ्रेचेंस्का और ऑर्सीनी तेजेंद्र की कहानियों के विषय में कहती हैं ''तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ सपना देखने वाले बैचेन लोगों की कहानियाँ हैं- चाहे वह एक ही रंग का सुदर्शन नाई का अपनी दुकान खोलने का सपना हो या ईंटों का जंगल के रोहिणी और नरेन का 'घर' पाने का सपना हो या फिर अभिशप्त के रजनीकांत की बेचैनी जो बी.ए. पास बेरोजगार होने के नाते गुजरात से लंदन पहुँच जाता है।'' [9]

तेजेंद्र शर्मा जी के कई कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जो इस प्रकार हैं- (1) काला सागर (1990), ढ़िबरी टाईट (1994), देह की कीमत (1999), ये क्या हो गया (2003), बेघर आँखें (2007) इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं-कब्र का मुनाफा, देह की कीमत, काला सागर, पासपोर्ट का रंग, कैंसर किराये का नरक, रेत का घरौंदा, ईंटों का जंगल, श्वेत श्याम, एक ही रंग तरकीब, मुझे मार डाल बेटा, चरमराहट, बेघर आँखे आदि।

कहानियों की बात की जाए तो कहानी के आरम्भिक सूत्र प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं। हितोपदेश जातक-माला आदि। लोक परम्परा से जुड़ी कहानियाँ है। कहानी जीवन के विभिन्न अनुभवों का संसार है जिसमें मानव समाज समग्रता में विद्यमान है। तेजेंद्र शर्मा मानते हैं कि ''कहानी हर विधा की मां है क्योंकि कुछ भी लिखो आप अपनी कहानी कहना चाहते है।'' [10] मानवीय अनुभूतियों को प्रकट करने में कहानी पूर्ण सक्षम होती है। गद्य की विभिन्न विधाओं में कहानी का महत्वपूर्ण स्थान है। सृजनशीलता हमेशा सामाजिक होती है। किसी भी रचना की सफलता की कसौटी है उसमें व्यक्त भाव व विचार का संतुलन। ''रचना वास्तव में भाव और विचार के समन्वय से उपजती है। लेकिन रचना ऊँची अपनी सतह यानी विचार के कारण ही कहलाती है। वह केवल शब्द सौंदर्य जगाने का साधन नहीं होती।'' [11] मुक्तिबोध भावनाभूत ज्ञान की बात करते हैं अर्थात ऐसा विचार जो भावों में ढलकर प्रकट हो।

सामान्यत: चित्त में उत्पन्न होने वाले हर्ष-शोकादि मनोविकार को भाव

कहते हैं। भरतमुनि ने सर्व प्रथम रस के संदर्भ में भावों की बात की थी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भाव को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समझाने का प्रयास किया है। उनके अनुसार ''प्रत्ययबोध, अनुभूति ओर वेग-युक्त-प्रवृति इन तीनों को गूढ़ संश्लेष का नाम 'भाव' है।... अनूभूति मूलत: सुखात्मक या दुखात्मक होती है। इसके साथ किसी प्रत्यय के संयुक्त होने पर जिस जटिल मानसिकता का गठन होता है, यह भाव है। सच्ची काव्यानुभूति भावानुभूति के रुप में ही होती है, जो जीवनानुभूति से संपृक्त है। इस प्रकार रचनाकार की किसी प्रत्यय विशेष से जुड़कर जो अनुभूति फलीभूत होती है, वह रचना में भाव की संज्ञा पाती है।''[12] आज कबीर हिंदी के पहले कवि माने जाते हैं जिनकी रचनाएँ विचारों से पुष्ट है। आज आधुनिक युग में मनुष्य जिस प्रकार अपने चारों ओर की समस्याओं से अधिकाधिक घिरता जा रहा है, विचार की भूमिका भी साहित्य और जीवन दोनो में महत्वपूर्ण होती जा रही है।

प्रवासी कहानीकारों की बात की जाए तो एक लंबी सूची है साहित्यकारों की जो अपनी कहानियों के माध्यम से लगातार हिंदी कहानियों को समृद्ध कर रहे हैं। सुषम बेदी की 'संगीत पार्टी', 'अवसान', सुधा ओम ढ़ींगरा का कहानी संग्रह 'कौन-सी जमीन अपनी', शैल अग्रवाल की 'वापसी', गौतम सचदेव की 'आकाश की बेटी', पूर्णिमा वर्मन की 'यूंही चलते हुए', अचला शर्मा की 'चौथी ऋतु', जाकिया जबैरी की 'मारिया', दिव्या माथुर की '2050', सुदर्शन प्रियदर्शनी की 'धूप' इत्यादि। इनकी कहानियाँ में नएपन का बोध है क्योंकि प्रवासी कथाओं में अन्य देशों के परिवेश, संस्कृति संघर्ष तथा विशेषताओं का अंकन देखने को मिलता है। इन कथाकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से एक भिन्न समाज से परिचय करवाया है। अपने देश को छोड़कर अन्य देश में बस जाना, अन्य संस्कृति में खुद को रचा-बसा देना आसान नहीं है। वे कई प्रकार के व्यक्तिगत, सामाजिक द्वंद्व तथा दबावों में रहते हैं। यह सांस्कृतिक दबाव उनकी कथाओं में दिखता है। यह भी सत्य है कि इन प्रवासी कहानीकारों की रचनाओं में विश्व के विभिन्न देशों की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितियां उनकी सृजनशीलता का हिस्सा बनकर उभरती हैं। यह सब हिंदी पाठक तक पहुँचना महत्वपूर्ण है। कई प्रकार के 'कल्चरल शॉक' सहते हुए यह प्रवासी साहित्यकार अपने देश से, अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं। इनकी कहानियों में सहज ही नई संवेदना, नई चेतना देखी जा सकती है।

तेजेंद्र शर्मा जी की कहानियों में आम व्यक्ति के सरोकारों को तवज्जो दी गई है। वे मानते हैं ''दिल में जब दर्द हो तो लिखा जाता है। 25 साल में दुनिया 200 साल आगे बढ़ गई है। साहित्य हारे आदमी के साथ खड़ा नजर

आता हैं। इंसान की तकलीफों, परेशानियों को लिखना साहित्यकार का दायित्व है।''[13] तेजेंद्र शर्मा मानते हैं कि प्रवासी साहित्यकार के विदेश में जीवन के तीन पड़ाव आते हैं- पहला जब वह अपने देश से दूर जाकर उसे याद करते हुए लिखता है। दूसरा अब वह विदेशी समाज को देखता है और समझने का प्रयास करता है और तीसरा पड़ाव जब वह विदेशी परिवेश को समझने में पूर्णत: सक्षम हो जाता है तो उसके साहित्य में नई दुनिया के दर्शन होते हैं। वे मानते हैं कि प्रवासी साहित्यकार ''वैश्विक व्यक्ति की बात करता है केवल भारतीय की नहीं। प्रवासियों का साहित्य विचारधारा से बंधा साहित्य नहीं है। वह सीमित विषयों पर नहीं विस्तृत विषयों पर लिखता है।''[14]

यह सत्य है कि मनुष्य जब अलग-अलग स्थानों पर जाता है तो उसकी संवेदना का विस्तार भी होता है। साहित्यकार पर तो इसका और अधिक प्रभाव पड़ता है। वह नई अनुभूतियों, नई संवेदनाओं, नए परिवेश को साहित्य की शक्ल में प्रस्तुत करता है। हावर्ड फास्ट के अनुसार ''बाह्य यथार्थ के संपर्क में आने के साथ-साथ रचनाकार संपूर्ण बाह्य यथार्थ को अपने मानस का अंग नहीं बनाता। वह चुनाव करता हैं। दूसरे बाह्य यथार्थ ज्यों के त्यों उसके मानस में अंकित नहीं होते, रचनाकार का सजग मानस उसे अपने अनुरूप नई शक्ल देता हैं। इसके अनंतर रचनाकार की भावना, कल्पना, प्रतिभा और शिल्प सब अपनी-अपनी भूमिका अदा करते हैं, और तब रचना सामने आती है। रचना बाह्य यथार्थ के चुने गए तथा नवीन आकृति में ढ़ाले गए अंशों, अनुभवों तथा संवेदनाओं का छना हुआ रूप हैं। उसमें मनुष्य के संपूर्ण अर्जित संस्कारों, परंपराओं एवं विवेक का योगदान होता हैं।"[15]

''पासपोर्ट का रंग" कहानी प्रवासी के दर्द और अपने देश के प्रति प्रेम को प्रकट करती है। इस कहनी की शरूआत में गोपाल दास त्रिखा इंगलैंड की महारानी के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा करते हुए मन ही मन खून के आँसू रो रहे होते हैं। उनका भारतीय मन यह गवाही नहीं देता है कि भारत को गुलाम बनाने वाले अत्याचारी गोरों के प्रति वे निष्ठा निभाए। वे अपने बेटे से कहते हैं-''मेरे लिए ब्रिटेन की नागरिकता लेने से मर जाना कहीं बेहतर हैं। मैंने अपनी सारी जवानी इन गोरे साहबों से लड़ने में बिता दी। जेलों में रहा।"[16] उनका इकलौता बेटा ब्रिटेन आकर बस गया था और यहीं की नागरिकता ले चुका था। वे अकेले भारत में थे। अकेलेपन से घबराकर बेटे के पास आ गए थे और बेटा उनकी इच्छा के विरूद्ध उन्हें ब्रिटेन की नागरिकता दिलवा देता हैं। पुत्र इन्द्रेश का अपना तर्क हैं-'ब्रिटेन पासपोर्ट के लिए लोग दो-दो लाख रूपया देते हैं रिश्वत में तब कहीं जाकर हासिल कर पाते हैं। आपको मुफ्त में मिल रहा है

तो आप इसकी कदर नहीं करते। ब्रिटेन का पासपोर्ट हो तो आप को किसी भी देश का वीज़ा लेने की ज़रूरत नहीं पड़ती। जब दिल किया, जहाँ जाना हो, बस हवाई जहाज की टिकट लीजिए और घूम आइए वहाँ।"[17] इन्द्रेश की पत्नी सरोज को भी लगता है कि इस प्रकार गोपाल दास की बिना इच्छा के नागरिकता नहीं बदलवानी चाहिए थी। गोपाल दास को जीवन में दो बार प्रवास की पीड़ा झेलनी पड़ी थी। पहले लाहौर से दिल्ली आकर बसने पर, दूसरी बार भारत से ब्रिटेन बसने पर। तमाम सुख-सुविधाओं के बावजूद वे वापस भारत की नागरिकता प्राप्त करना चाहते थे। एक बार भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दोहरी नागरिकता के ऐलान की खबर सुनकर उनकी यह इच्छा वेग तोड़कर बहती नदी के समान हो जाती है। परन्तु राज नेताओं के वादे तो वादे होते हैं। गोपालदास का दोहरी नागरिकता के लिए भारत भवन के चक्कर लगाना, दोस्तों से केवल इसी विषय पर चर्चा करना उनकी उस कसक को बयां करती है जहाँ व्यक्ति अपनी जड़ों से कटकर अपने ही देश का नागरिक नहीं रह पाता और इस सच्चाई को स्वीकार भी नहीं करना चाहता है। भारत के लिए वीज़ा अप्लाई करना उन्हें शर्मनाक लगता है। 2 वर्ष वे दोहरी नागरिकता के वादे के पूरा होने का इंतजार करते हैं। वे सोचते हैं "केवल पासपोर्ट का रंग नीले से लाल होने पर इंसान के भीतर कितनी जद्दोजहद शुरू हो जाती है।"[18] कहानी का अंत बहुत ही मार्मिक है। हाई कमीशन से निराश लौटकर गोपालदास अवसादग्रस्त हो जाते हैं। वे समझ जाते हैं कि दोहरी नागरिकता का ऐलान प्रवासियों को खुश करने का एजेंडा मात्र है। पुनः भारत की नागरिकता प्राप्त करने का सपना लिए ही वे परलोक सिधार जाते हैं।" गोपालदास जी एकटक छत को देखे जा रहे थे। उनके दाएँ हाथ में लाल रंग का ब्रिटिश पासपोर्ट था और बाएँ हाथ में नीले रंग का भारतीय पासपोर्ट। इन्होंने ऐसे देश की नागरिकता ले ली थी जहाँ के लिए इन पासपोर्ट की ज़रूरत नहीं थी। स्टार न्यूज़ पर नए प्रधानमंत्री घोषणा कर रहे थे कि अब 11 देशों में बसे सभी भारतीयों को दोहरी नागरिकता प्रदान की जाएगी।"[19] कहानी का अंत गोपालदास जैसे प्रवासी भारतीयों के प्रति करुणा पैदा करता है जो देश छोड़कर विदेशों में आ बसते हैं। परन्तु उनकी आत्मा अपने ही देश में छूट गई है।

"कब्र का मुनाफा" कहानी पूंजीवाद की प्रकृति उपभोक्तावाद तथा बाजारवाद के प्रभावों से संवेदनहीन होती मनुष्यता की कहानी है। यह बाजारवादी समय की तस्वीर पेश करती है। अमीर जीते जी तो गरीबों से घृणा करते ही हैं वरन् मरने के बाद भी नहीं चाहते कि किसी गरीब की कब्र उनकी कब्र के पास हो। पूंजीवाद असमान पूंजी के वितरण पर टिका है। गरीबों के लिए इसमें कोई

स्थान नहीं है। यह बाजारवादी समय अमीरों की शानो-शौकत का सारा इंतजाम रखता है और अब मरने के बाद भी उनकी उच्चता ग्रंथि को पोषित करने का इंतजाम भी बाज़ार ने कर दिया है। इस कहानी में दिखाया है कि अब अमीरों के मरने के बाद पॉश इलाके में आलीशान कब्र बुक की जा सकती है। यानी मरने के बाद भी आलीशान तरीके से कब्र में दफन हुआ जा सकता है। यह ब्रिटेन के घोर बाजारवादी परिवेश को, मृत्यु के बाद के इंतजामों को बाजार के हाथ सौंपने के नए विचार व संवेदनाओं को चित्रित करती है।

यह कहानी खलील जैदी और नजम जमाल के नए बिजनेस शुरू करने के विचार से शुरू होती है। लंदन के फाइनेंशियल सेक्टर में खलील एक बड़ा नाम है। नजम खलील को बताता है कि उसके जैसे अमीर लोगों ने कब्र बुक कर ली है। "आपने कार्पेंडर्स पार्क के कब्रिस्तान में अपनी और भाभी जान की कब्र बुक करवा ली है या नहीं? देखिए उस कब्रिस्तान की लोकेशन, उसका लुक और माहौल एकदम यूनीक है।"[20] जिन्दा गरीबों के लिए चाहे रहने को दो गज जमीन न हो पर वे अपने मरने का इंतजाम भी फाइव स्टार जैसा चाहते हैं। और तो और ये लोग धर्म, नस्ल, जाति के आधार पर भी अलग कब्रिस्तान चाहते हैं। जीते जी तो भेदभाव रखा ही मरकर भी उसे बनाए रखना चाहते हैं। "यार ये साला कब्रिस्तान शिया लोगों के लिए एक्सक्लूसिव नहीं हो सकता क्या?.... वर्ना मरने के बाद पता नहीं चलेगा कि पड़ोस में शिया है या सुन्नी या फिर गुजराती टोपी वाला। यार सोचकर ही झुरझुरी महसूस होती है। मेरा बस चले तो एक कब्रिस्तान बनाकर उस पर बोर्ड लगा दूं - शिया मुसलमानों के लिए रिज़र्वड।"[21] बाजार की लच्छेदार भाषा का प्रलोभन विशेष दर्शनीय है कि वे मौत के बाद इंसान का इतनी भव्यता के साथ अंतिम संस्कार करेंगे कि कोई भी एक भारी रकम चुकाकर मर कर जीना चाहेगा। जैसे लाश को नहलाना, नए कपड़े पहनाना, रॉल्स रॉयस में लाश की सवारी और कब्र पर संगमरमर का प्लाक आदि। यदि किसी की एक्सीडेन्ट में मृत्यु हो जाए तो जैसे आग से जलकर मर जाए तो लाश का ऐसा मेकअप किया जाएगा कि वे एकदम जवान और खूबसूरत दिखे।

नजम की पत्नी आबिदा है और नादिरा खलील जैदी की। दोनों का ही व्यवहार अपनी पत्नियों से अधीनस्थों जैसा है जो उनकी सल्तनत में रहती हैं और वे चाहते हैं कि वे दोनों भी अन्य कर्मचारियों की भांति उनके अनुसार ही जीए। उन्हें उनका खुदपरस्त होना, प्रश्न करना, जवाब देना कतई बर्दाश्त नहीं। कहानी पितृसत्ता पर भी व्यंग करती है। विदेशों में भी पुरुष समाज की सोच वही है जैसी हिंदुस्तान में। दोनों के पतियों के पास उनके लिए समय नहीं है।

जो पैसा देते हैं उसका पूरा हिसाब रखते हैं जैसे पत्नियां नहीं मुलाजिम हो। वे नाम को घर की मालकिनें है। दोनों जताने से बाज नहीं आते कि वे घर के मालिक हैं। नादिरा उच्च शिक्षित है परंतु खलील का झूठा पौरुष यह गवारा नहीं करता कि उसकी बीवी नौकरी करे। नादिरा द्वारा उत्पीड़ित महिलाओं की सहायता करना भी उसे पसंद नहीं है। नादिरा जानती है खलील की परेशानी वह है- कंट्रोल करने की बीमारी। वह सभी कुछ अपने कंट्रोल में रखना चाहता है। यदि वह स्वतंत्र रुप से अपने विचार रखना चाहे तो जैसा कि वह परवेज की पार्टी में लोकतंत्र पर अपने विचार रखती है तो खलील उसे तलाक की धमकी दे देता है। वह एक नकली मुस्कुराहट चिपका कर रहती है, चेहरे पर। खलील द्वारा कब्र बुक करने का विचार नादिरा को कतई पसंद नहीं आता वह कहती है "खलील, आप जिदंगी भर तो इन्सान को पैसों से तौलते रहे। क्या मरने के बाद भी आप नहीं बदलेंगे। मरने के बाद तो शरीर मिट्टी ही है, फिर मिट्टी का नाम चाहे अब्दुल हो नादिरा या फिर खलील।" [22] खलील का उत्तर उसकी सामंतवादी सोच को दिखाता है "मैं नहीं चाहता कि मरने के बाद हम किसी खानसामा, मोची या प्लंबर के साथ पड़े रहें।.... भई अपने जैसे लोगों के बीच दफन होने का सुख और ही है।" [23]

कहानी का अंत उसके आरम्भ में खलील और नजम के नए बिजनेस शुरु करने की समस्या से होता है और उसका अंत करता है क्योंकि अब उन्हें नया आइडिया मिल चुका है जो लाभकारी है यानी कब्रों की बुकिंग का क्योंकि इसमें बहुत मुनाफा है। नादिरा खलील द्वारा बुक कराई कब्रें कैंसिल कर देती है और बताती है "आपने साढ़े तीन सौ पांउड एक कब्र के लिए जमा करवाए है। यानी कि दो कब्रों के लिए सात सौ पाउंड। और अब इन्फले"श्न की वजह से उन कब्रों की कीमत हो गई है ग्यारह सौ पाउंड यानी कि आपको हुआ है कुल चार सौ पाउंड का फायदा, बस एक साल भर में। उसने नजम की तरफ देखा। नजम की आँखों में भी वही चमक थी। नया धंधा मिल गया था।" [24]

'देह की कीमत' कहानी संपन्न घरों में निरन्तर बढ़ती भावनात्मक विपन्नता की कहानी है। यह कहानी छीजते रिश्तों की, खोखले संबधों की, खून के रिश्तों में घुलती अर्थ संचालित सच्चाईयों की, पैसे को ही सब कुछ मानने की सोच, लगातार संवेदनहींन होते समाज की सच्चाई बयां करती है। पारिवारिक संबधों की चुकती उष्मा को, आत्मीयता के ह्रास को दिखाती है। इस कहानी की शुरुआत होती है परमजीत के वैधव्य की घटना से और ससुराल वालों के तानों, अमानवीय व्यवहार से। परमजीत की शादी हरदीप से हुई थी। हरदीप

भारत में रहने वाले उन युवकों का प्रतिनिधित्व करता है जो किसी भी तरह विदेश जाकर ढेर सारा पैसा कमाना चाहते हैं। "उसके ताऊजी जब से आस्ट्रेलिया जाकर बस गये थे.. तब से हरदीप के मन में बस एक ही साध थी कि कहीं विदेश में जाकर ही बसना है.... उसे तो बस किसी भी तरह विदेश जाना था. .. बस.. वहाँ जाना था... पैसा कमाना था और ऐश की जिन्दगी जीनी थी।" [25] हरदीप अपनी इच्छा पूरी भी कर लेता है इल-लीगल तरीके से जापान पहुँच जाता है। परमजीत नहीं चाहती कि उसका पति इल-लीगल तरीके से जापान जाए तो वो भी पुरुष होने का अधिकार उस पर जताता है क्योंकि परमजीत उसकी पत्नी है,एक औरत है तो उसे तो पति की बात माननी ही होगी। वह पत्नी को इस काबिल नहीं मानता कि उसे अपने फैसलों में भागीदार बनाएँ। "ओये तुम जनानियों को मर्दो की बात में दखल नहीं देना चाहिए।... तुम अपना घर संभालों.. बस। ... पैसे कमाना हम मर्दों का काम है। वोह हमारे उपर ही छोड़ दो।" [26] परमजीत उच्च शिक्षित थी परंतु पति की नजरों में वह केवल घर का काम करने लायक थी क्योंकि उसका सामंती दृष्टिकोण स्त्री को रसोई के अलावा और किसी काम के लायक नहीं समझता था।

अपने देश के अच्छे भले घरों के नवयुवक जो साधन संपन्न है परंतु फिर भी विदेशों का इन्द्रजाल उन्हें अपनी ओर खींचता है। यही स्थिति हरदीप की थी "खाते -पीते घर का 'काका' , जापान में अवैध काम करने को अभिशप्त था। .... वहाँ वो कुली भी बन जाता था तो कभी रेस्टॉरेन्ट में बर्तन भी मांज लेता था... हर वो काम जो हरदीप अपने देश में किसी भी कीमत पर नहीं करता, जापान में सहर्ष कर लेता था। कारण? ... झूठी शान के अतिरिक्त क्या हो सकता है... कि लड़का जापान में काम करता है।" [27]

जापान में काम करते हुए एक दिन हरदीप की मौत हो जाती है उसके साथी आपस में तीन लाख रुपये इक्ट्ठा करके उसकी लाश को भारत भेजने का प्रबंध करते है परंतु भारतीय दूतावास का एक अधिकारी नवजोत उन्हें सलाह देता है कि हरदीप की लाश का क्रिया कर्म जापान में कर देना चाहिए और तीन लाख का ड्राफ्ट उसकी पत्नी के नाम बनवा देना चाहिए। परमजीत के ससुर दारजी ही उसके ससुराल में एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्हें सही मायनों में इंसान कहा जा सकता है। एक केवल वही अपनी बहु के साथ खडे+ नजर आते है। वह अपनी बहु के भविष्य को देखते हुए यह फैसला लेते हैं कि उनके बेटे का क्रियाकर्म जापान में ही कर दिया जाए और तीन लाख का ड्राफ्ट बहु के नाम भेज दिया जाएँ।

हरदीप की मां तथा भाई का चरित्र मानवता और रिश्तों को शर्मशार

करने वाला है। मां बेटे की मौत का जिम्मेदार बहु के भाग्य को मानती है तो देवर इस अवसर को कैश करने के लिए खुद जापान जाने का सपना पूरा करना चाहता है। हरदीप की मां अपने बेटे के कफन के बदले तीन लाख की रकम चाहती है। "सारे पैसे कल दी आई कुड़ी को क्यों मिले पुत्तर तो हमारा गया है।"[28] यह संवाद रिश्तों के संवेदनहीन होने का प्रमाण है। कहानी बिना शोर-शराबे के चरमबिंदु पर पहुँच जाती है। परमजीत सब सुनकर अंत में पुरुष सत्ता की रुढ़िवादी सोच के खिलाफ आवाज ही तो उठाती है। "उसने तीन लाख रुपये का ड्राफ्ट उठाया। ... उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह उसके पति की देह की कीमत है या उसके साथ बिताये पाँच महीनों की कीमत।"[29]

'मलबे की मालकिन' कहानी एक प्रेम त्रिकोण को दिखाती है। परंतु यह प्रेम त्रिकोण सामान्यत: होने वाले प्रेम त्रिकोण जैसा नहीं है। इसके एक कोने पर मां, दूसरे पर बेटी और तीसरे पर वह युवक है जिसे बेटी पंसद करती है परंतु वह मां को पंसद करता है। यह अलग ही ट्रीटमेंट की कहानी है। यह कहानी भी अंतिम दृश्य से प्रारम्भ होती है और उसपर ही आकर समाप्त भी होती है परंतु बहुत से प्रश्नों को छोड़कर, बहुत ज्यादा तनाव के बिन्दु पर आकर। यह कहानी अमिता उसकी पुत्री नीलिमा और समीर की है। अमिता सदैव आगे पढ़ना चाहती थी परंतु उसके पिता उसकी इच्छा को नजरअंदाज कर कम उम्र में उसकी शादी कर देते हैं। अमिता चौथी बेटी थी उसका विवाह कर वे गंगा नहाना चाहते थे। "जो भी मिले उसी के पल्ले बांध दो। मां-बाप को तो गंगा नहानी है। ... पढ़-लिखकर खराब होने से तो कहीं अच्छा है अपना घर बसाओ, पति का ध्यान रखो और बच्चों को पाले। कुछ यूं सा महसूस होने लगा था, जैसे मैं कोई इंसान नहीं हूं, केवल एक मादा शरीर हूं, जिसे किसी भी नर शरीर के खूंटे पर बांध देना है।"[30] अमिता का प्रेमी रजत भी उसकी शिक्षा दीक्षा में कोई रुचि नहीं रखता था और पति वह तो केवल अमिता को देह ही मानता था। हांड-मांस का खिलौना और वंशबेल बढ़ाने का साधन। ससुराल वालों के लिए बहु के रुप में मुफ्त का नौकर "बहु के लिए आवश्यक था कि वह घर में गरीब बैल की तरह जुटी रहती। ... गरीब पिता के घर भी गरीब थी, और अमीर ससुराल में भी गरीब। नौकरों के घर में रहते हुए भी ऐसा क्यों होता था कि मैं स्वयं अपने आपको उन्हीं नौकरों में से एक पाती थी।"[31] अमिता जब पुत्री को जन्म देती है तो संकीर्ण, रुढ़िवादी, सढ़ी सोच के उसके ससुर उसे घर से निकाल देते हैं। अपनी बेटी नीलिमा को लेकर वह इस संसार में अकेले संघर्ष करती है, उसे पालती है। अंतत: एक दिन उसे समीर के रुप में भावी दामाद दिखता है। उसकी बेटी नीलिमा भी

समीर को पंसद करती है यह उससे छिपा नहीं था। वह समीर से नीलिमा के रिश्ते की बात करती है परंतु समीर का उत्तर सुनकर उसके जीवन मे ज़लज़ला ही आ जाता है। क्योंकि समीर उसकी बेटी से नहीं उससे विवाह करना चाहता है। यह बात नीलिमा भी सुन लेती है। इस बिन्दु पर कथा समाप्त हो जाती है। लेकिन यह तूफान अमिता की जिदंगी में कुछ नहीं छोड़ता, सिवाय मलबे के। यह कहानी पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की स्थिति, उसके संघर्ष, उसकी ताकत, उसकी जिजीविषा और उसके जीवन में उठते बवंडरों का लेखा जोखा है।

'कैंसर' कहानी एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसमें कैंसर पत्नी के शरीर में होता है और जीवन कैंसर ग्रस्त पति का हो जाता है। यह कहानी एक पति के मनोविज्ञान, उसके द्वंद्व, उसकी टूटन, उसकी हताशा, निराशा, तनाव और अवसाद को बहुत बारीकी से, बहुत सूक्ष्मता से, सघनता से बयां करती है। इसमें एक कैंसर तो शारीरिक है जो पत्नी को है और दूसरा मानसिक है जो पति को होता है, पत्नी की बीमारी जानकर। पति की द्वंद्वग्रस्त मनोभूमि पर यह कहानी रची गई है। नरेन आधुनिक व्यक्ति का प्रतीक है वह कर्मवाद में यकीन करता है, भाग्यवाद में नहीं। वह स्वयं को नास्तिक मानता है। पत्नी पूनम का कैंसर उसे देवी मां, चर्च, नमाजी सबकी चौखट पर खड़ा कर देता है। नरेन की बैचेनी ऐसी है कि किसी प्रकार भी तरह कंट्रोल नहीं हो पा रही है। " बैचेनी मेरे रक्त के साथ-साथ शरीर में संचार कर रही थी। यदि खून टेस्ट करने में बेचैनी की मात्रा टेस्ट करने का कोई यंत्र होता, तो मेरे मन की बैचेनी उस यंत्र की सभी सीमाएँ लांघ जाती।" [32] नरेन बीमार पत्नी को देवी का प्रसाद खिलाता है, नमाजी का ताबीज बांधता है, चर्च जाता है। पूनम को अपने कैंसर से ज्यादा पति के जीवन के कैंसर ग्रस्त होने का गम ज्यादा है। "उसे यही गम खाये जाता है कि अपने पति का जीवन कैंसर से ग्रस्त करने की जिम्मेवार वही है।... पूनम की आँखों में बस एक ही सवाल दिखाई दे रहा है ... 'मेरा पति मेरे कैंसर का इलाज तो दवा से करवाने की कोशिश कर सकता है, ... मगर जिस कैंसर ने उसे चारों ओर से जकड़ रखा है... क्या उस कैंसर का भी कोई इलाज है?"[33] यह कहानी प्रतीकात्मक अर्थ लिए हुए। नरेन की बेचैनी पाठक को भी बेचैन कर डालती है।

'इंतजाम' कहानी विदेशी परिवेश और संवेदनाओं की कथा है। एक मां द्वारा बेटी की खुशियों के लिए जो 'इंतजाम' किया जाता है वह न केवल चौंकाता है बल्कि अचंभित भी करता है। एक मां अपने प्रेमी को ही बेटी का भी प्रेमी बनाने का निर्णय लेती है। यह कहानी पूर्णत: विदेशी परिवेश की है।

यहाँ के परिवेश के सर्वथा प्रतिकूल जान पड़ती है। यह कहानी जिल, उसके पति टैरेंस, उसकी बेटी एलिसन और जिल के प्रेमी जेम्स की है। मुख्यत: यह कहानी जिल की है। यह कहानी छीजते दांपत्य में विवाहेतर सबंधों और उसके जस्टिफिकेशन की कहानी है। जिल का पति टैरेंस एक टी.वी. एक्ट्रेस के प्रेम में पड़ जाता है और उसकी उपेक्षा करने लगता है। पति की उपेक्षा जिल में निराशा और घुटन पैदा कर देती है। वह तड़पती है, रोती है और ऐसे में उसके जीवन में खुशनुमा बयार बनकर जेम्स का आगमन होता है जो उम्र में उससे छोटा है। जेम्स के प्रेम की फुहार जिल के तपते रेगिस्तान से जीवन को महका देती है, गीला कर देती है अपने प्रेम से सरोबार कर देती है'। ''एक विशेष किस्म का रिश्ता बन गया था जिल का सन्नाटे के साथ सन्नाटे की इस दीवार में से एक दिन निकल आया था जेम्स, जिसके आने के बाद सन्नाटे में एक खास तरह का संगीत सुनाई देने लगा था। जिल अब हर वक्त एक खुमारी सी में रहती थी। चेहरे पर एक मुस्कुराहट सदा विराजमान। टैरेंस अगर अपने में न फंसा होता तो अवश्य ही उसे दिखाई देता कि जिल किसी और ही दुनिया में रहने लगी है।''[34] जेम्स जिल के जीवन के खालीपन को भर देता है। परंतु जो जिल के दांपत्य जीवन में हुआ था वही तूफान उसकी बेटी एलिसन के जीवन में भी आता है। अब जिल को एलिसन के जीवन को मधुर संगीत से भरना है। वह एक फैसला लेती है, एक ऐसा फैसला जो समूची पितृसत्ता पर तमाचा है। उसका यह निर्णय पश्चिमी स्त्री की चाहत, उसकी इच्छा और जीवन को अपने लिए केवल अपनी शर्तों पर जीने का करारनामा है। वह अपनी बेटी के सूनेपन और रिक्तता को भरने के लिए अपने ही प्रेमी जेम्स का इंतजाम करती है। बहुत कुछ टूटता है पर बेआवाज। यह इंतजाम समाज की चूले हिलाता है, चेतावनी देता है पर बहुत शोर शराबे के साथ नहीं चुपचाप!!

'रेत का घरौंदा' कहानी का परिवेश ब्रिटेन का है। इस कहानी में दीपा है जो भारतीय मूल की हैं परंतु नेल्सन नाम के ब्रिटिश लड़के से प्रेम विवाह करती है, विवाह विच्छेद करती है, दूसरा विवाह करती है परन्तु खुश या संतुष्ट नहीं रह पाती। खुशहाल जीवन का उसका सपना रेत का घरौंदा ही साबित होता है। इस कहानी में भारतीय मूल की लड़कियों की ब्रिटिश युवकों से विवाह की हसरत को भी दिखाया है। दीपा के ऑफिस में काम करने वाली लड़कियां ''मन ही मन कहीं मुझसे जलती भी थीं। उनके माता-पिता भारत से उनके लिए पति आयात करना चाहते थे। उनके मन में भी तीव्र इच्छा उठती थी कि कोई नेल्सन उन्हें भी चाहे।''[35] गोरों और भारतीयों में संस्कारगत अन्तर तो है ही दीपा बचपन से बेशक ब्रिटेन में रही थी परंतु नेल्सन की तरह

वह खुद को व्यक्त नहीं कर पाती। ''नेल्सन कहीं भी अपने प्यार का इज़हार करने में शर्म महसूस नहीं करता था... फिर चाहे पार्क हो या सड़क। लंदन में पैदा होने और गोरी चमड़ी का मालिक होने का एक यह भी तो लाभ है।''[36] नेलसन की मां की सोच नस्लवादी है वह कभी दीपा को बहु के रुप में स्वीकार नहीं कर पाती है। वह सदा एक अंग्रेज औरत ही बनी रही। ''नेल्सन की मां मुझे बार-बार याद दिलाती थी कि उसका पिता भारत में अफसर हुआ करता था और उन दिनों रेस्टॉरेंट में भारतीयों और कुत्तों को अंदर आने की अनुमति नहीं होती थी। आज एक भारतीय उसकी बहु थी... उसके लिए तो डूब मरने की बात थी।''[37] यह संवाद आज भी बहुत से अंग्रेजों की नस्लीय सोच का उदाहरण है जो भारतीयों को हिकारत की दृष्टि से देखते हैं। नेल्सन से अलग होने के बाद दीपा नरेन से दूसरा विवाह करती है, नरेन उसके बेटे टॉम का अच्छा पिता तो बन जाता है परंतु अपनी पूर्व पत्नी शिवांगी की मृत्यु के पश्चात भी केवल उसी से प्रेम करता है। वह दीपा के लिए उसका अच्छा पति नहीं बन पाता। यह विवाह भी वह शिवांगी के कारण ही करता है एक समझौता समझकर। दीपा के लिए सुखी वैवाहिक जीवन रेत का घरौंदा बनकर ही रह जाता है। यह कहानी पश्चिमी परिवेश में रहती भारतीय स्त्री के जीवन को दिखाती है जो कुछ पश्चिमी कुछ भारतीय है और दो संस्कृतियों के समन्वय स्थल पर दुविधाग्रस्त अधूरी खड़ी है।

'चरमराहट' कहानी में बाबरी मस्जिद के ध्वंस की गूंज देखी जा सकती है। साम्प्रदायिकता की भयावहता को देखा जा सकता है। बाबरी मस्जिद का नाम नहीं लिया गया है। परंतु वह कहानी की केन्द्रीय घटना मानी जा सकती है। धर्म के नाम पर देश और दुनिया में क्या-क्या हो रहा है, जिसमें धर्म के अतिरिक्त सब कुछ है। साम्प्रदायिक दंगों का कहानी के मुख्य पात्र इन्द्रमोहन तिवारी पर ऐसा प्रभाव पड़ता है कि वह नास्तिक हो जाता है। वह नहीं चाहता कि उसके नाम से उसके धर्म का पता चले सो वह अपना नाम आय.एम. तिवारी से आई.एम. हिंदुस्तानी रख लेता है। परंतु सभी जगह धर्म का बड़ा महत्व है लोग हो या सरकार या कोई कम्पनी सभी को लोगों के धर्म की जानकारी चाहिए। हिंदुस्तानी भी जहाँ जाता है धर्म का कॉलम नजर आता है चाहे नौकरी का फॉर्म हो अथवा पासपोर्ट, वीजा का। उसे नौकरी मिली इस्लामी देश जेहाद में जहाँ धर्म के नाम पर विभिन्न स्तरों पर भेदभाव था। ''पहला फर्क तो मुस्लिम और गैर-मुस्लिमों में था। मुस्लिमों में सउदी और गैर-सउदी का फर्क था। अरबी और गैर-अरबी मुसलमानों में अंतर था। अमीर और गरीब देशों के मुसलमानों में अंतर था। फिर गैर-मुस्लिमों में चमड़ी का अंतर था -

यानी गोरा और काला।''[38] वहाँ 'धार्मिक पुलिस' का आतंक सर्वोपरि था उनसे सउदी नागरिक भी डरते हैं और प्रवासी तो उन्हें देखकर घबरा ही जाते है। परंतु हिंदुस्तानी को वहाँ अच्छी पगार मिल रही थी इसलिए ऐसी परिस्थितियों में भी जेहाद छोड़कर नहीं आना चाहता था। हिंदुस्तानी को समझ नहीं आता था कि ईराक-कुवैत एक ही धर्म के दो देश आपस में क्यों लड़ते है। धर्म की जटिलताओं को समझने में वह असमर्थ था। भारत में बाबरी मस्जिद के तोड़ने जाने का विश्व के ऊपर क्या प्रभाव पड़ा खासकर मुस्लिम देशों पर क्या पड़ा, वह यह कहानी दिखाती है। इस घटना के बाद जेहाद में हर हिंदु को कसूरवार माना गया। वहाँ रहते भारतीय परिवार अपने को असुरक्षित महसूस करने लगे। हिंदुस्तानी के दोस्त संजय की बेटी चयनिका का स्कूल में बायकाट कर दिया गया। ''रोती हुई सूजी आँखे लेकर शाम को चयनिका ने संजय से पूछ ही लिया, ''पापा, आपने मस्जिद क्यों तोड़ी? क्लास में मेरे से कोई बात भी नहीं करता''। हिंदुस्तानी को लगा जैसे उसके शरीर का एक-एक हिस्सा चरमराकर मलबे का ढेर बनता जा रहा है।''[39] वहाँ की पुलिस के द्वारा हिंदुस्तानी को उसकी इच्छा के विरुद्ध 'डिपोर्टी कैम्प' से भारत रवाना कर दिया गया उसके पासपोर्ट पर 'एग्जिट' की लाल मोहर लगाकर। हिंदुस्तानी को अब अपने नाम से भी साम्प्रदायिकता की बू आने लगी थी। भारत आकर उसे लगता है कि केवल एक ढांचा ही नहीं चरमराया ''बल्कि उसके साथ बहुत कुछ चरमरा गया है, लोगों का विश्वास, प्यार, भाईचारा समाज की नींव, सब चरमरा गया है।''[40]

'श्वेत-श्याम' कहानी जीवन के श्वेत-श्याम पक्षों को उकेरती है। उपर से उजले और अन्दर से श्याम लोगों को, संगीता और सुनील जैसे लोगों के श्याम पक्ष को, यह कहानी दर्शाती है कि ब्रांडिड चीजों को पाने की चाहत, फाईव स्टार होटलों में जाने की ललक, मंहगी से मंहगी वस्तु के उपभोग की लालसा इंसान को कितने अंधकार में धकेल देती है। संगीता और हेमन्त की सुखी ग्रहस्थी में यह बाजारवादी, उपभोक्तावादी हवस आग लगा देती है। हेमन्त आर्मी में है और कई-कई महीने पत्नी संगीता से दूर बार्डर पर रहता है। संगीता मिसेज कोहली जैसी स्त्रियों की संगत में उनकी पार्टियों में जाकर पथभ्रष्ट हो जाती है। कम समय में ज्यादा आमदनी और ऐशो-आराम की जिन्दगी के लोभ में संगीता कॉल गर्ल बन जाती है। मिसेज कोहली उसे ग्राहकों के पास भेजती है। एक दिन संगीता के समक्ष उसका अपना देवर ही ग्राहक के रुप में खड़ा होता है और संगीता बेहोश हो जाती है। कहानीकार ने एक प्रश्न किया है। गलत सिर्फ संगीता ही नहीं सुनील भी है जो इस प्रकार परस्त्री गमन करता है। संगीता सोचती है ''दोनो की स्थिति तो एक ही थी। फिर सुनील...। वह तो इस

घटना से दूध का धुला बाहर निकल आयेगा। आखिर पुरुष है न ...। मरना तो औरत को ही पड़ेगा। फिर यह समाज भी तो पुरुष का ही बनाया हुआ है न। इसीलिए तो एक ही भूल के लिए पुरुष और नारी को भिन्न-भिन्न सजा मिलती है।''[41] यह समाज के दोहरे मापदण्ड हैं जो औरत और आदमी के लिए अलग-अलग हैं। गलती दोनों की है और दोनों को ही समान सजा मिलनी चाहिए। संगीता जानती है कि औरत होने के कारण वही समाज के कोप का भाजन बनेगी। यह कहानी बाजार के प्रभावों को रेखांकित करती है।

'मुझे मुक्ति दो' कहानी तथाकथित लेखकों और संपादकों के दोगले व्यक्तित्व की कलई खोलती है। इस कहानी के रमेशनाथ एक पत्रिका के संपादक हैं। वह लेखक होने के फायदे लेना चाहते हैं। वह लिखते बहुत सुंदर भाषा में हैं परंतु जब अपनी पत्नी लता को शराब के नशे में मारते हैं और गालियां देते हैं तो उनकी भाषा कुछ और ही होती है। अपनी पत्नी को जैसे-तैसे अभाव में गुजारे लायक पैसे देते है और काफी पैसा प्रेस क्लब की शराब के बिल और बाहरी औरतों पर खर्च करते हैं। यदि कोई उनकी आलोचना करे तो उन्हें बर्दाश्त नहीं। वह आलोचकों को 'कुत्ते' मानते हैं। एक दिन स्वप्न में उनकी अपनी चेतना लता के रुप में उन्हें झिंझोड कर रख देती है। लता उनके दोगलेपन, लेखक का फायदा लेने के लिए औरतों को प्रेरणा के रुप में देखना और संबध बनाने पर धिक्कारती है। ''बुद्धिजीवी प्राणी आम इंसान की भांति मजा तो लेना चाहता है, परंतु आम आदमी की जिम्मेदारियां निभाने में लेखक की नानी क्यों मरने लगती है?''[42] वह पूछती है कि वह पत्नी में प्रेरणा या शक्ति क्यों नहीं ढूंढता जो सब कुछ वह कर रहा है यदि वह भी वही सब करे तो और रमेशनाथ हड़बड़ाकर उठ जाता है। इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ऐसे बुद्धिजीवियों, लेखकों की खबर लेता है जो लेखक होने के कारण स्वय को औरों से विशिष्ट मानते हैं और अपनी जिम्मेदारियों से बचते हैं ओर नैतिकता के कायदे भी अपने लिए अलग स्वयं गढ़ते हैं। ऐसे लेखकों पर यह कहानी व्यंग्य कसती है। उनको गाल पर करारा तमाचा मार कर उन्हें सोचने पर विवश करती है।

फ्रेम से बाहर' कहानी दर्शाती है कि संवादहीनता कैसे ग्रंथि का रुप धारण कर लेती है। यह कहानी नेहा नाम की बच्ची की है। उसके माता पिता उसे बहुत प्यार करते हैं परंतु उसके जुड़वा भाईयों के जन्म के बाद उसकी उपेक्षा करने लगते हैं और उसे हॉस्टल भेज देते हैं। यहाँ से नेहा और उसके माता-पिता के बीच दूरियां बढ़नी शुरु होती है। अब नेहा के जीवन में एक भावनात्मक तूफान उठता है। विवाह की संस्था से उसका विश्वास उठ जाता

है। वह विवाह न करने तथा कभी भी बच्चे पैदा न करने का निर्णय लेती है। यह दिल को छू जाने वाली अनूठी अपने प्रकार की अलग कहानी है। इस कहानी में नेहा की दशा का बड़ा ही सुंदर, मार्मिक मनोवैज्ञानिक चित्रण कहानीकार ने किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तेजेंद्र शर्मा जी एक सफल कहानीकार हैं। वे जीवन से विविध, विस्तृत विषयों को चुनते है, कहानी के रुप में बुनते हैं और पेश करते हैं। वह अपने अपनाए हुए देश के परिवेश, संघर्ष, उनकी उपलब्धियों, रिश्तो, अनुभूतियों और संवेदनाओं को दर्शाते हैं बिना लाउड हुए आम आदमी की पीड़ा को दिखाते हैं और जिन्दगी की मुश्किलों से गुजरते पात्रों द्वारा नए रास्तों को खोजते हैं। तेजेंद्र जी कहानियों में मानवीय संबधों के जटिल और बहुआयामी चित्र देखने को मिलते हैं। उनकी कहानियाँ समाज की ठोस समस्याओं से जुड़ी है और परिवेश तथा चरित्रों के माध्यम से वह समाज के अनाचार को व्यक्त करते हैं। अन्याय के विरुद्ध कमजोर व्यक्ति के पक्ष को ये कहानियाँ बयां करती हैं। वे विदेशों में बसे भारतीयों की पीड़ा, तनाव, कसक, भय, समस्याओं और संघर्षों का चित्रण करते हैं। भारत में ही नहीं सभी देशों में स्त्री की स्थिति दोयम दर्जे की है उनकी कहानियाँ स्त्री-पुरुष के लिए बनाए अलग कायदों, मापदण्डों, पितृसत्ता का प्रतिकार करती हैं। वे दो संस्कृतियों का संगम भी दिखाते हैं। इन कहानियों में इंसान के मनोवैज्ञानिक व सांस्कृतिक द्वंद्वों को, दवाबों को सहज ही महसूस किया जा सकता है। ये कहानी का आरंभ उस बिन्दु से करते हैं जो दरअसल उसका अंत होता है यानी कहानी के अंत से उसका प्रारम्भ यह उनकी अपनी तकनीक है। नरेन उनका प्रिय नाम है क्योंकि कई कहानियों में मुख्य पात्र का नाम वे नरेन रखते हैं। जैसे कैंसर, रेत का घरौंदा, कोष्ठक आदि।

संदर्भ

1. आशीष कंधवे- अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, 'वैश्विक पटल पर प्रवासी हिंदी साहित्य' हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, 20.1.2017
2. तेजेंद्र शर्मा - वही
3. सत्यकेतु सांकृत - वही
4. डॉ. कृष्ण कुमार - वर्तमान साहित्य (प्रवासी महाविशेषांक-1) जनवरी-फरवरी 2006, पृ0 68, संपादक -कुँवरपाल सिंह, नमिता सिंह, अलीगढ़।
5. कमलेश्वर - वर्तमान साहित्य (प्रवासी महाविशेषांक-2) मई 2006, पृ0 18, संपादक -कुँवरपाल सिंह, नमिता सिंह, रामघाट रोड, अलीगढ़।
6. हिमांशु जोशी - वही, पृ0 25
7. राजेंद्र यादव -mohallalive.com 2011/12/13 से साभार
8. प्रो0 अमीन मुगल -hindinest.com/ss/ss.t.htm से साभार
9. प्रो0 फ्रेंचेस्का ऑर्सीनी - वही
10. तेजेंद्र शर्मा - अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, 'कथा साहित्य वैश्विक परिदृश्य, मोती लाल नेहरु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, 21.01.2017
11. रमेश गौतम (संपादक) -रचनात्मक लेखन, पृ0 31 चौथा संस्करण 2014, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
12. हरीश अरोड़ा, डॉ. अनिल कुमार - सृजनात्मक लेखन, प्रथम संस्करण 2007, पृ0 33, के.एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद।
13. तेजेंद्र शर्मा - अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, 'कथा साहित्य: वैश्विक परिदृश्य, मोती लाल नेहरु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, 21.01.2017
14. तेजेंद्र शर्मा - वही
15. डॉ. अमरनाथ - हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, संस्करण 2012, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. तेजेंद्र शर्मा - पासपोर्ट का रंग (कहानी) www. abhivyakti.hindi. org>-passport
17. तेजेंद्र शर्मा - वही
18. तेजेंद्र शर्मा - वही
19. तेजेंद्र शर्मा - वही
20. तेजेंद्र शर्मा - कब्र का मुनाफा, www.hindisamay.com
21. तेजेंद्र शर्मा - वही
22. तेजेंद्र शर्मा - वही
23. तेजेंद्र शर्मा - वही
24. तेजेंद्र शर्मा - वही
25. तेजेंद्र शर्मा - देह की कीमत (कहानी संग्रह) द्वितीय संस्करण 2007, पृ0 11, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
26. तेजेंद्र शर्मा - वही, पृ0, 13
27. तेजेंद्र शर्मा - वही, पृ0, 15, 12
28. तेजेंद्र शर्मा - वही, पृ0, 19
29. तेजेंद्र शर्मा - वही, पृ0, 20
30. तेजेंद्र शर्मा - मलबे की मालकिन, वही, पृ0, 22
31. तेजेंद्र शर्मा - वही, पृ0, 23
32. तेजेंद्र शर्मा - कैंसर, वही, पृ0, 38

33. तेजेंद्र शर्मा – वही, पृ0, 42
34. तेजेंद्र शर्मा – इंतजाम, sarokarnama.blogspot.in
35. तेजेंद्र शर्मा – रेत का घरौंदा, देह की कीमत (कहानी संग्रह) पृ0, 54
36. तेजेंद्र शर्मा – वही, पृ0, 51
37. तेजेंद्र शर्मा – वही, पृ0, 57
38. तेजेंद्र शर्मा – चरमराहट, वही, पृ0, 121
39. तेजेंद्र शर्मा – वही, पृ0, 125
40. तेजेंद्र शर्मा – वही, पृ0, 127
41. तेजेंद्र शर्मा – श्वेत-श्याम, वही, पृ0, 94
42. तेजेंद्र शर्मा – मुझे मुक्ति दो, वही, पृ0, 48